पंचगव्य निर्देशिका

गव्यं पवित्रं च रसायनं च, पथ्यं च हृद्यं बलबुद्धिं।
आयुःप्रदं रक्तविकारहारि, त्रिदोषहृद्रोगविषापहं स्यात्।

महर्षि वाग्भट्ट चिकित्सा एवं पंचगव्य अनुसंधान केन्द्र

कट्टावाक्कम, जिला : कांचिपुरम, तमिलनाडु

संपर्क : 044-2641 4723, सेल : 09444 030 4723.

www. panchgavya.org

e-mail - niranjan@panchgavya.org

केन्द्र की ओर से

आज से 5,235 वर्ष पूर्व जब अपने सौर्यमंडल के सभी ग्रह एक सीधी रेखा में आ गए थे। तभी एक नए युग का प्रारंभ हुआ। जिसे कलियुग कहा गया। इस कलियुग के द्वार पर श्रीकृष्ण का जीवन 125 वर्ष का था। 432,000 वर्ष की आयु वाले कलियुग के लिए श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन हमारे लिए उत्कृष्ट जीवन शैली है। जिसके सहारे हम भी 125 वर्ष तक रोगमुक्त जीवन जी सकते हैं।

श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में देवों की माता गौ को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया। गायों को मनुष्य जीवन के लिए ऊर्जा के सबसे बड़े श्रोत के रूप में सिद्ध किया। इतना ही नहीं ; भूमि, मनुष्य और अन्य जीवों की रक्षा के लिए गउ पालन को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया। उन्होंने स्वयं गाय पाली और उनकी सेवा की। वे जीवनभर रोगमुक्त और ऊर्जावान रहे।

श्रीकृष्ण से लगभग 1,700 वर्ष बाद महर्षि चरक हुए। जिन्होंने आयुर्वेद के साथ - साथ गायों से प्राप्त ऊर्जा के विभिन्न रूपों पर शोध किया और अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्य वाग्भट्ट को मानव कल्याण के लिए प्रचारित करने को कहा।

इन्हीं दिनों से गायों से प्राप्त ऊर्जा (गौमूत्र, गोबर, दूध, दही और घी), जिसे वैदिक संस्कृति से पंचगव्य कहा गया है, को मनुष्य के रोगमुक्त जीवन के लिए प्रचारित किया जाने लगा। जिनमें एक नाम है महर्षि घाट भड्डरी। वे महर्षि वाग्भट्ट से लगभग 2,000 वर्ष बाद और आज से लगभग 1,500 वर्ष पूर्व हुए। उन्होंने कहावत के रूप में लिखा है -

जा घर तुलसी अरु गाय, ता घर वैद्य कबहुं ना जाय।

अर्थ - जिस घर में तुलसी का पौधा और गाय हो उसके यहां कोई बीमार नहीं पड़ सकता। और किसी कारण बीमारी आ भी जाए तो तुलसी और गाय की ऊर्जा से वह ठीक हो जाएगा। अत: उसके घर में वैद्य (डॉक्टर) की कोई जरुरत नहीं है।

मूल रूप में यही कारण था कि भारत में अस्पताल बनाने की संस्कृति विकसित नहीं हुई थी। अंगरेजों ने जब भारत को गुलाम बनाया तब उन्हें यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भारत के लोग बीमार नहीं पड़ते। और किसी कारण से बीमार पड़ भी गए तो रसोईघर और गांव का वैद्य ही उन रोगों के लिए काफी होता था।

पौराणिक भारत में शल्य चिकित्सा के भी कई प्रमाण मिलते हैं। जब भी युद्ध क्षेत्र या किसी कारण से किसी की दुर्घटना हो जाती तो नाई ब्राह्मण उनकी शल्य चिकित्सा करते थे। भारत के नाई ब्राह्मण इसके बहुत बड़े जानकार हुआ करते थे। हैदरअली ने जब एक अंगरेज सेनापति का नाक और कान काट लिया तो उसकी कटी नाक और कान को कर्नाटक के एक गांव के एक नाई ब्राह्मण ने ही शल्य चिकित्सा से जोड़ी थी।

अत: अंगरेजों ने सोची समझी चाल के तहत भारत की गायों को काटने के लिए कसाईखाने खुलवाने शुरु किए। और यह रफ्तार इतनी तेज हुई की आज भी भारत में प्रतिदिन लगभग 20-25 लाख से भी ज्यादा गाएं काटी जा रही हैं। वर्तमान में गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ ने गायों की हत्या पर पूर्ण रूप से विराम लगा दिया है। यह एक शुभ संदेश है।

इस प्रकार गायों की घटती संख्या ने भारत को रोगग्रस्त करना शुरु कर दिया और आज के भारत में वे सभी प्रकार के रोग सूखे जंगल में आग की तरह फैल रहे हैं जिसकी चपेट में यूरोप और अमरीका कई सौ वर्षों से भुक्तभोगी है।

चैत्र प्रतिपदा, विक्रम संवत 2054,
ई. सन : 22 मार्च 2008.

पंचगव्य महौषधि अंतिम विकल्प

आज के विज्ञान ने इस तथ्य को प्रमाणित कर दिया है कि गौमूत्र में वे सभी तत्व हैं जिनसे मिलकर यह शरीर बना है। मानव शरीर जब मृत हो जाता है और दाह संस्कार कर दिया जाता है तब उसमें बचे हुए राख को प्रयोगशाला में परीक्षण करने पर पता चला कि उस राख में 24 प्रकार के तत्व हैं। ये सभी 24 तत्व गौमूत्र में भी उपलब्ध है। यही कारण है कि जब किसी तत्व की कमी के कारण कोई रोग हो तो गौमूत्र के सेवन से वह रोग ठिक हो जाता है। गौमूत्र की एक और विशेषता है कि इसके सेवन से शरीर का कोई तत्व अपनी जरुरत से अधिक सीमा तक नहीं बढ़ता। अत: शरीर और शरीर के तत्वों में संतुलन बना रहता है। अत: इसे स्पष्ट रूप में समझ लेना चाहिए कि पंचगव्य औषधि ही मानव शरीर की व्याधियों के लिए अंतिम और सुरक्षित विकल्प है।

गाय और काऊ में अंतर

जिसे हम गाय, गो, गऊमाता आदि कहते हैं वे सभी भारत के देशी नस्ल वाली गाएं ही हैं। जिनमें सूर्य नाड़ी उपलब्ध होती है। लेकिन जिनमें सूर्य नाड़ी नहीं होती वे सभी काऊ हैं। काऊ का अर्थ है - अधिक दूध और मांस के लिए सूअर से क्रॉस कराए गए जानवर। जैसे जरसी, होस्टियन, क्रांस आदि। इन जानवरों के दूध, गौमूत्र, और गोबर में वे सभी 24 तत्व नहीं है जो मानव शरीर की जरुरत है। अत: यह बात स्पष्ट है कि सूर्य नाड़ी वाली गाएं ही पंचगव्य औषधि के लिए उपयुक्त हैं।

इसका साइड इफेक्ट नहीं है

पंचगव्य की दवाओं का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता इसे आज के विज्ञान ने प्रमाणित कर दिया है। अत: यह पूरी तरह से स्वच्छ और सुरक्षित चिकित्सा पद्धति है।

- संगीता, पंचगव्य महौषधि चिकित्सक, मोबा. 9444 38 90 39.

अमृत गौमहौषधि

गौमूत्र मनुष्य को प्राप्त होनेवाला दुर्लभ वरदान है। यह धर्मानुमोदित सहज प्राप्त है। हानिरहित कल्याणकारी एवं आरोग्य रक्षक रसायन है। स्वस्थ व्यक्ति की स्वास्थ्य रक्षा तथा असाध्य रोगों को नष्ट करने हेतु सभी औषधियों में दिव्य है। महर्षि चरक के अनुसार गौमूत्र कटु, तीक्ष्ण एवं कसाय है। इसके गुणों में उष्णता, रसयुक्त, झारलघु एवं अग्निदीपक है। यह वात्त, पीत्त एवं कफ तीनों में हितकर है। अत: यह सर्वरोगहारिणी रसायन गौमूत्र है।

वर्तमान समय में करोड़ों रुपये डॉक्टर, दवा एवं अस्पतालों में खर्च हो रहे हैं। फिर भी रोग और रोगियों की संख्या इतनी बढ़ रही है कि चिकित्सा विज्ञान की समझ से बाहर तो है ही साथ ही मानव समाज व्याधियों से पूरी तरह ग्रस्त हो चुका है। बहुत से अमीर - गरीब अपना धन गंवाकर भगवान की याद करते हैं फिर भी रोमुक्त नहीं होते हैं। उनको हताशा - निराशा एवं रोग की जटिलता हाथ लगती है। जिसकी चिकित्सा भी कष्टमय हो जाती है। ऐसे में पंचगव्य महाषौधि वरदान स्वरूप साबित होती है।

हमारा प्राचीन भारत पंचगव्य विज्ञान से भरा पड़ा था। इसकी पांचों चीजें गोमूत्र, गोबर, दूध, दही एवं घी बहुत पवित्र एवं गुणकारी है। पंचगव्य अमृत रसायन होने के कारण इसके सेवनकाल में शरीर का रोग क्षय होकर सभी उत्सर्ग अंगों से धीरे - धीरे बाहर निकल जाता है। जिसमें मुख्य रूप से मल, मूत्र, पसीना एवं श्वांस प्रमुख उत्सर्ग है।

इसलिए इसका उपयोग आवश्यक परहेज के साथ करने पर किसी एक रोग का नहीं बल्कि होने वाले अनेक अज्ञात रोग भी स्वत: क्षय हो जाते हैं। इसकी विधि अत्यंत सरल एवं शीघ्र लाभकारी है।

- अजय कुमार, बी.आई.ए.एम.एस.

CHEMICAL DESCRIPTION OF COW URINE AND CURE OF DISEASES ACCORDINGLY.

S.No.	Chemical Name	Effect of chemical on diseases
1.	Nitrogen **N2 ,NH2**	Removes blood abnormalities and toxins, Natural stimulant of urinary track, activates kidneys and it is diuretic.
2.	Sulphur **S**	Supports motion in large intestines. Cleanses blood.
3.	Ammonia **NH3**	Stabilise bile, mucous and air of body. Stabilises blood formation.
4.	Copper **Cu**	Controls built up of unwanted fats.
5.	Iron **Fe**	Maintains balance and helps in production of red blood cells & haemoglobin. Stabilises working power.
6.	Urea **CO(NH2)2**	Affects urine formation and removal. Germicidal.
7.	Uric Acid **C5H4N4O3**	Removes heart swelling or inflammation. It is diuretic therefore destroys toxins.
8.	Phosphate **P**	Helps in removing stones from urinary track.
9.	Sodium **Na**	Purifies blood. Antacid.
10.	Potassium **K**	Cures hereditary rheumatism. Increases appetite. Removes muscular weakness and laziness.

11.	Manganese **Mn**	Germicidal, stops growth of germs, protects decay due to gangrene.
12.	Carbolic acid **HCOOH**	Germicidal, stops growth of germs and decay due to gangrene.
13.	Calcium **Ca**	Blood purifier, bone strengthener, germicidal.
14.	Salt **NaCl**	Decreases acidic contents of blood, germicidal.
15.	Vitamins **A,B,C,D,E**	Vitamin B is active ingredient for energetic life and saves from nervousness and thirst, strengthens bones and reproductive ingredient for energetic life and saves from nervousness and thirst, strengthens bones and reproductive power.
16.	Lactose **C6H12O6**	Gives satisfaction., strengths heart, removes thirst and nervousness.
17.	Enzymes	Make healthy digestive juices, increase immunity.
18.	Water **(H2O)**	It is life giver. Maintains fluidity of blood, maintains body temperature.
19.	Hipuric acid **CgNgNox**	Removes toxins through urine.
20.	Creatinin **C4HgN2O2**	Germicide.
21.	Aurum Hydroxide **AuOH**	It is germicidal and increases immunity power. AuOH is highly antibiotic and anti-toxic
22.	Other Minerals	Increase immunity.

गौमूत्र के मुख्य घटक एवं कार्य

गौमूत्र में 1500 सी सी की पूर्ण मात्रा में द्रव्यमान 1440 ग्राम तथा घन भाग 60 ग्राम होता है। गौमूत्र के मुख्य संघटक जल, यूरिया, सोडियम, क्लोराइड, अम्ल, क्षार तथा अन्य लवण होते हैं। हिप्युरिक एसिड तथा अमोनिया का निर्माण वृक्क में होता है तथा शेष का निर्माण रक्त में ही होता है। वृक्क छानने का कार्य करता है।

1) यूरिया

- यह मूत्रल है।
- वृक्क (किडनी) का प्राकृत उत्तेजक है।
- मूत्र के उत्सर्ग पर इसका निरंतर प्रभाव होता है। अत: यह एक प्रकार के अंत:स्त्राव के समान ही कार्य करता है।
- कीटाणुनाशक है।

2) यूरिक एसिड

- मूत्रल (ड्यूरेटिक) होने के कारण यह शोथनाशक है तथा विषनाशक है।

3) हिप्यूरिक एसिड

- यह शरीर का निर्विषीकरण तथा उत्सर्ग का प्रमुख साधन है।

4) सोडियम क्लोराइड

- कोषाणुओं तथा द्रवों में व्यापन भार का नियमन करता है।
- रक्त प्रवाह में क्षार रक्षण करता है।
- यह रक्त शोधक तथा अम्लतानाशक है।

4) सोडियम क्लोराइड

- कोषाणुओं तथा द्रवों में व्यापन भार का नियमन करता है।
- रक्त प्रवाह में क्षार रक्षण करता है।
- यह रक्त शोधक तथा अम्लतानाशक है।

5) फास्फोरिक एसिड

- अस्थि तथा दंत का निर्माण एवं विकास करता है।
- किण्वतत्वों (एण्जाइम) की क्रिया को प्रेरणा देता है।
- शाक तत्वों तथा स्नेहों का सात्मीकरण करता है।
- शारीरिक वृद्धि में सहायक होता है।

6) सल्फ्यूरिक एसिड

- शरीर के विकास के लिए आवश्यक है।
- विचर्चिका तथा अन्य चर्म रोगों में प्रतिषेध करता है।
- धातुओं का लौह परिमाण का नियमन करता है।

7) अमोनिया

- शरीर में उत्पन्न अम्लों के प्रतिरक्षण का कार्य करता है। अमोनिया अम्लों के साथ मिलकर अमोनिया के लवण बनाता है तथा शरीर की अत्यधिक अम्लता से रक्षा करता है। इसप्रकार अमोनिया शरीर धातुओं एवं रक्त के उदजन-अणु केन्द्रीभवन को स्थिर रखता है क्योंकि जिस प्रकार अम्लों के बाद अमोनिया का उत्सर्ग बढ़ जाता है उसी प्रकार क्षारीयता वृद्धि की अवस्थाओं में वह कम हो जाता है।

8) क्रीटीनीन

- शरीर में इसका उत्सर्ग सल्फेट के समान होता है। शरीर की पेशियों में क्रियेटिन का संचय करने का गुण है और वे एक प्रकार से उसके कोष का कार्य करती है।

9) क्लोरीन

- पाचन में सहायक होता है।
- आमाशयिक रस के स्त्राव में सहायक है।
- रक्त तथा धातुओं के व्यापन भार का नियमन करता है।
- किण्व तत्वों (एंजाईम) को क्रियाशील बनाता है।
- जल धारण शक्ति का नाश नहीं होने देता है।
- शरीर भार में कमी नहीं होने देता है।
- पाचन विकार नहीं होने पाता।

10) पोटाशियम

- शरीर के प्राकृतिक विकास में सहायक है।
- शरीर के पेशी क्रिया में सहायक है।
- पेशी नियंत्रण में दुर्बलता नहीं आने देता है।
- शरीर भार में कमी नहीं होने देता।
- इसकी उपस्थिति से पाचन शक्ति का ह्रास नहीं होने पाता।
- यह क्षुधा वर्धक है।
- यह आम वात का नाश करता है।

11) सोडियम

- कोशाणुओं तथा द्रवों में व्यापन का नियमन करता है।
- रक्त प्रवाह में क्षार रक्षण करता है।
- शरीर में नाड़ी विकार तथा लवणक्षय नहीं होने देता है।
- जल धारण की शक्ति को बनाए रखने में सहायक है।

12) कैल्शियम

- शरीर में अस्थि दंत के विकास में सहयोगी है।
- शरीर में अस्थि में भंगुरता, अस्थि शोष, दंतकोटर आदि के होने को रोकता है।
- यह उत्तम रक्त स्कन्दन है।
- यह रक्त शोधक है।

13) मैगनीशियम

- शरीर में शोधक प्रभाव हेतु आवश्यक है।
- किण्व तत्वों (एंजाईम) की क्रिया का प्रेरक है।
- मस्तिष्क दौर्बल्यता नाशक है।
- पाचन में सहायक होकर पाचन विकार नहीं होने देता।
- शारीरिक वृद्धि में सहायक है।
- हृदय गति की तीव्रता से रक्षा करता है।
- यह उत्तम कीटाणुनाशक है।

नोट : गौमूत्र का संघटन : 1500 सी सी गोमूत्र में = 1) ठोस पदार्थ 60 ग्राम, 35 ग्राम सेन्द्रिय तथा 25 ग्राम निरिन्द्रिय।

1) गोमयादी नारी संजीवनी

यह ऐसी दवा है जो महिलाओं के गर्भधारण संबंधी अंगों के विकार आदि में अत्यंत लाभकारी है। मुख्य रूप से महिलाओं की निम्न बीमारियों में इसका सेवन किया जा सकता है। 1) श्वेत प्रदर 2)रक्त प्रदर 4) मासिकधर्म की अनियमितता 5) दर्दयुक्त मासिकधर्म 6) कमर, हाथ, पैर व पिंडली में दर्द 7) चक्कर आना 8) खून की कमी 9) गर्भाशय की नई-पूरानी सूजन 10) गर्भाशय में फोड़े-फुनसी 11) अण्डाणुओं की कमी 12) भूख की कमी 13) चिड़चिड़ापन 14) गर्भाशय की दुर्बलता।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम। नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।

सामान्य निर्देश : तेलिआ पदार्थ, खट्टा, मीठा, ज्यादा मिर्च मसाले युक्त खाद्य पदार्थ के सेवन से बचें।

मुख्य घटक : गौमूत्र, देशी शक्कर एवं निम्बू सत्त, शतावरी चूर्ण, अशोक एवं लोध्र।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 70.00 मात्रा

यस्य देशस्ययोजन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्

ऋषि चरक ने लिखा है कि जो प्राणी जहां रहता है उसी क्षेत्र में पैदा की हुई वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए। अर्थात आस - पास की पैदा की हुई और तैयार की गई औषधि ही हितकारी है।

2) गोमयादी आसव

उदर संबंधी निम्न रोगों में लाभकारी। 1) कब्ज 2) पाचन शक्ति की कमी 3) भूख की कमी 4) छाती में जलन 5) गैस बनना 6) पेट दर्द 7) खूनी एवं बादी बवासीर 8) आंत में कीड़े 9) पीलिया 10) मल त्याग में कष्ट 11) यकृत एवं पलीहा में सूजन 12) खून की कमी, आदि।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम।
नाश्ता या भोजन के आधा घंटा के बाद।
नोट : बच्चों के लिए एक-एक चमच दो बार

सामान्य निर्देश : तेलाहा पदार्थ, खट्टा, मीठा, ज्यादा मिर्च मसाले युक्त खाद्य पदार्थ के सेवन से बचें।

मुख्य घटक : गौमूत्र अर्क एवं पूराना देसी गुड़।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 70.00 मात्र

दूध - दही व मट्ठा

महर्षि वाग्भट्ट के अनुसार दूध, दही और मट्ठा खाने का उपयुक्त समय अलग - अलग है। दूध पीने का सही समय रात्रि में सोते समय है क्योंकि दूध को पचाने के लिए पेट में जिस एंजाईम की जरुरत है वह सूर्यास्त के बाद ही बनता है। इसी प्रकार पेट में दही और मट्ठा (छांछ) पचाने वाला एंजाईम तभी बनता है जब पृथ्वी पर सूर्य का पूरा प्रभाव हो, यानि दोपहर के समय।

3) गोमयादी अर्क

सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी। जिनमें मुख्य रोग इस प्रकार हैं। 1) पाचन तंत्र संबंधी 2) हृदय रोग 3) रक्तचाप 4) चर्म रोग 5) मधुमेह 6) गठिया 7) सूजन 8) कैंसर

सेवन विधि : दो-दो चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम।
नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।
नोट : बच्चों के लिए एक-एक चमच दो बार

सामान्य निर्देश : पंचगव्य चिकित्सक की सलाह के अनुसार।

मुख्य घटक : गौमूत्र

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 55.00 मात्र

गोमयादी वटी

सेवन विधि : गोमयादी अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

गोमूत्रे त्रिदिनं स्वाप्य विषंतेन विशुद्धयति

कैसा भी विष, उपविष, महाविष क्यों न हो उसकी विषाक्तता का दुर्गुण गौमाता के गोमूत्र में मात्र तीन दिन तक पड़े रहने पर समाप्त होकर वह अमृत के समान औषधि के रूप में उपयोगी हो जाता है।

4) गोमयादी तुलसी अर्क

यह नया - पुराना सभी प्रकार के बुखार में शीघ्र लाभकारी है। जैसे 1) सर्दी, 2) खांसी, 3) जुकाम, 4) निमुनिया, 5) वायु, 6) कब्ज आदि।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम।
नाश्ता या भोजन के आधा घंटा के बाद।
नोट:बच्चों के लिए एक-एक चम्मच दो बार

सामान्य निर्देश : पंचगव्य चिकित्सक की सलाह के अनुसार।

मुख्य घटक : गौमूत्र एवं तुलसी पत्ता।

उपलब्धता : 200 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 35.00 मात्र

गोमयादी तुलसी वटी

सेवन विधि : गोमयादी पुनर्नवादी अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

जीर्ण ज्वरे मनोरोगे शोध-मूच्छा, भ्रमेषुच, हितं एतद् उदाहृतम।

आयुर्वेद के इस श्लोक के अनुसार पुराने से पुराना बुखार (ज्वर), मानसिक बीमारियां, सूजन, बेहोशी और भ्रम अर्थात मस्तिष्क विकारों को दूर करने में गाय का दूध - घी सर्वोत्तम हितकर है।

5) गोमयादी नंदी अर्क

किसी भी कारण से बांझपन रोग में हितकारी।

1) गर्भाशय की दुर्बलता या अंडाणुओं की कमी।

2) पुरुषों में शुक्राणु की कमी या शुक्राणु की दुर्बलता।

सेवन विधि : चार-चार चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम।
नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।

सामान्य निर्देश : **पुरुष :** खट्टा, लाल मिर्च, गरम मसाला एवं तेल में छने हुए भोजन का परहेज।

स्त्री : मीठा, लाल मिर्च,गरम मसाला एवं तेल में छने हुए भोजन का परहेज।

मुख्य घटक : नंदी का गौमूत्र।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

गोमयादी नंदी वटी

सेवन विधि : गोमयादी नंदी अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

6) गोमयादी अर्बूद अर्क

सभी प्रकार के कैंसर, कुष्ठ एवं कष्टसाध चर्मरोग तथा शरीर में गांठ-गिलटी आदि में अत्यंत लाभकारी।

1) रक्त कैंसर, गर्भाशय कैंसर, गले का कैंसर, जबड़ा में कैंसर, स्तन कैंसर, पेट का कैंसर आदि। 2) अल्सर, छाजन (एग्जिमा)।

सेवन विधि : चार-चार चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम। नाश्ता या भोजन के आधा घंटा के बाद।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

सामान्य निर्देश : **पथ्य :** मौसमी फलों का रस। अंकुरित मूंग, गेहूं एवं चना। देशी गाय का दूध।

अपथ्य : चिकनाई पदार्थ, घी, लाल मिर्च।

मुख्य घटक : गौमूत्र, सर्पगंधा, अनंतमूल एवं वरुण छाल।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर एवं 2500 मीली लीटर।

गोसेवा राशि : रुपया 75.00 मात्र एवं 350.00 मात्र

गोमयादी अर्बूद वटी

सेवन विधि : गोमयादी अर्बूद अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

7) गोमयादी अर्जून अर्क

1) हृदय की दुर्बलता एवं निम्न रक्तचाप में लाभकारी।

सेवन विधि : चार-चार चम्मच दो बार - सुबह एवं शाम। नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

सामान्य निर्देश : **पथ्य :** मौसमी फलों का जूस। अंकुरित मूंग, गेहूं एवं चना। देशी गाय का दूध।

अपथ्य : चिकनाई पदार्थ, घी आदिं

मुख्य घटक : गौमूत्र, अर्जुन छाल।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 75.00 मात्र

गोमयादी अर्जुन वटी

सेवन विधि : गोमयादी अर्जून अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

कब्ज

रात्रि में सोते समय एक चम्मच एरण्ड का तेल गुनगुना दूध में मिलाकर लें। इससे कब्ज दूर होता है एवं प्रात: शौच साफ होता है।

8) गोमयादी पुनर्नवादी अर्क

1) मूत्र मार्ग में होने वाला पथरी, 2) मूत्र विसर्जन के समय जलन एवं दर्द, 3) अधिक मूत्र का आना, 4) मूत्र रुक - रुक कर आना, 5) शरीर में किसी भी प्रकार का सूजन, 6) किडनी का दर्द, 7) श्वास रोग, 8 पांडु रोग, 9) वृद्धावस्था में पुरुष ग्रंथी की वृद्धि 10) पेट में बनने वाला गैस आदि रोगों को खत्म कर नया खून बनने में मदद करता है।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच तीन बार - सुबह, दोपहर एवं शाम।

नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

सामान्य निर्देश : **अपथ्य :** नमक कम खाना है।

मुख्य घटक : गौमूत्र, पुनर्नवा एवं पाषाणभेद।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 70.00 मात्र

गोमयादी पुनर्नवादी वटी

सेवन विधि : गोमयादी पुनर्नवादी अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

9) गोमयादी सर्पगंधा अर्क

1) गोमयादी सर्पगंधा अर्क हृदय की दुर्बलता, उच्च रक्तचाप तथा अनिद्रा में लाभकारी है।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच तीन बार - सुबह, दोपहर एवं शाम।

नास्ता या भोजन के आधा घंटा के बाद।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

सामान्य निर्देश : **अपथ्य :** नमक कम खाना है।

मुख्य घटक : गौमूत्र व सर्पगंधा।

उपलब्धता : 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 70.00 मात्र

गोमयादी सर्पगंधा वटी

सेवन विधि : गोमयादी सर्पगंधा अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

10) गोमयादी निम्बोली अर्क

शरीर के किसी भी भाग में छोटी - छोटी फुनसियां उनमें खाज - खुजली होना, जलन एवं दर्द होना, खुजलाने पर पानी निकलना, छाजन (एक्जिमा), दिनाय, दाद इत्यादि में सेवन के साथ-साथ लगायें।

सेवन विधि : दो-दो चम्मच तीन बार-सुबह, दोपहर व शाम। नाश्ता या भोजन के आधा घंटा बाद।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

सामान्य निर्देश : **अपथ्य :** खट्टा एवं मीठा नहीं खाना है।

मुख्य घटक : गौमूत्र, नीम एवं तुलसी।

उपलब्धता : 200 एवं 500 मीली लीटर

गोसेवा राशि : रुपया 30.00 एवं 65.00 रुपये मात्र

गोमयादी निम्बोली वटी

सेवन विधि : गोमयादी निम्बोली अर्क के साथ लें।

उपलब्धता : 30 गोली

गोसेवा राशि : रुपया 60.00 मात्र

खट्टी डकार आना

1) रात्रि में सोते समय गुनगुना दूध में मिश्री मिलाकर पीएं। 2) छांछ में जीरा व सौंफ का चूर्ण एक-एक ग्राम मिलाकर पीने से खट्टी डकार बंद होती है।

19) गोमयादी मलहम

शरीर के किसी भी भाग में छोटी - छोटी फुनसियां उनमें खाज - खुजली होना, जलन एवं दर्द होना, खुजलाने पर पानी निकलना, छाजन (एक्जिमा), दिनाय, दाद इत्यादि में लगाने के लिए।

लगाने की विधि : प्रभावित भाग को गोमयादी निम्बोली अर्क से सफाई कर सूखने के बाद लगाए।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : गौमूत्र छार, नीला थोथा, पेट्रोलियम जेली, गोशकृत एवं गैरिक चूर्ण।

उपलब्धता : 10 ग्राम एवं 50 ग्राम

गोसेवा राशि : रुपया 15.00 एवं 60.00 रुपये मात्र

20) गोमयादी सफेद दाग मलहम

शरीर के किसी भी भाग में सफेद दाग को शीघ्र खत्म कर चमड़े के वास्तविक रंग को लाने में मदद करता है।

प्रयोग विधि : प्रभावित भाग को गोमयादी निम्बोली अर्क से सफाई कर सूखने के बाद लगाए।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : गौमूत्र, बावची बीज, गेरु, गंधक व खसीस।

उपलब्धता : 10 ग्राम एवं 20 ग्राम

गोसेवा राशि : रुपया 50.00 एवं 75.00 रुपये मात्र

21) गोमयादी नेत्रऔषधी

मोतियाविंद, आंखों से पानी बहना, पलकों का सूजन, दृष्टि धुंधली होना, आंखों में खुजली आदि में लाभकारी।

डालने की विधि : सुबह एवं रात को सोने से पूर्व दोनों आंखों में एक - एक बूंद डालें।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार,औषधि प्रयोग के समय अन्य किसी प्रकार का आई ड्राप न डालें। साबुन एवं शेम्पु के पानी से अपनी आंखों को बचाएं।

मुख्य घटक : ताम्र मिश्रित गौमूत्र एवं गुलाबजल।

उपलब्धता : 15 मीली।

गोसेवा राशि : रुपया 20.00.

दही एवं मट्ठा का प्रयोग

1) दही एवं मट्ठा ताम्बा, कांसा, पीतल एवं अल्युमुनियम के बर्तन में न रखें। 2) दही बनाने के लिए मिट्टी एवं चांदी का बर्तन ही श्रेष्ठकर है। 3) शीत ऋतु में मट्ठा एवं दही का प्रयोग गुनगुना कर जीरा एवं हींग से छौंक लगाकर सेवन करें। 4) वर्षा काल में दही तथा मट्ठा का उपयोग खाने में न लाएं। 5) किसी भी काल में दही एवं मट्ठा का उपयोग काला नमक, हींग एवं भुना जीरा मिलाकर करें।

22) गोमयादी घी

सर्दी, खांसी एवं जुकाम, नाक से पानी आना, सिर में दर्द रहना, नींद नहीं आना, चक्कर आना, याददाश्त की कमजोरी एवं मस्तिष्क तथा फेफड़े से संबंधित सभी रोगों में लाभकारी।

डालने की विधि : रात्रि में सोते समय दोनों नाकों में एक - एक बूंद डालें।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : चांदी युक्त घी।

उपलब्धता : 50 एवं 100 मीली

गोसेवा राशि : रुपया 30.00 एवं 60.00 मात्र

पीलिया

1) एक पका हुआ केला, छांछ या दही में मथकर मिश्री मिलाकर लें। 2) तीन ग्राम आंवले का चूर्ण छांछ में मिलाकर लें। 3) तीन ग्राम ग्वारपाठे का रस छांछ या दही में मिलाकर लें। 4) त्रिफला का प्रयोग रात्रि में सोते समय करें।

पथरी

प्याज के छोटे - छोटे टुकड़े कर लें। फिर उसे दही में मिलाकर दिन में सेवन करें। इससे पथरी दर्द में आराम मिलता है। लगातार कुछ दिनों तक सेवन करने से पथरी गल कर निकल जाता है।

23) गोमयादी बालपाल रस

यह बच्चों के विभिन्न रोगों में लाभकारी है। जैसे अरुचि, यकृत की कमजोरी, पीलिया, रक्त में विकार, बुखार, पेट से संबंधित रोग, दर्द उल्टी, अपच आदि।

सेवन विधि : 1 से 3 वर्ष - आधा चम्मच सुबह-शाम
4-12 वर्ष - एक चम्मच सुबह-शाम

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : पिपली चूर्ण, मरिच चूर्ण, अजमोदा, चित्रक, नीम्बू सत्त, गोमूत्र एवं ,शर्करा।

उपलब्धता : 200 मीली

गोसेवा राशि : रुपया 35.00

छाला

1) रात को सोने से पूर्व मुंह के अंदर गाय का शुद्ध घी मलें। 2) दूध में एक चुटकी कत्था का घोल मिलाकर गले के अंदर तक गरारे करें।

नाक से खून

1) आधे ग्लास दूध को उबालकर उसमें पुराना घी डालकर सूंघें। 2) गाय का दूध गुनगुनाकर मिश्री मिलाकर पीएं।

वायु गोला

1) गुनगुना दूध में शहद और केशर घोलकर पीएं। 2) लहसुन की 15 कलियां दूध में उबालकर गुनगुना होने पर पीएं।

24) गोमयादी दर्द निवारण तेल

गर्दन दर्द, कमर दर्द, घुटना दर्द, गठिया एवं अन्य किसी भी प्रकार के दर्द में लाभकारी। कमर से एड़ी तक होने वाले (घृतशी) दर्द में उपयोगी।

लगाने की विधि : थोड़ा गर्म कर दर्द वाले हिस्से में हल्का मालिस करें।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : तिल का तेल, कर्पूर, आजवाईन सत्त, नीलगिरी तेल, दशमूल पत्र एवं धतुरा पत्र।

उपलब्धता : 60 मीली

गोसेवा राशि : रुपया 35.00

कमर दर्द

1) बड़े खजूर की गुठली को निकालकर, उसमें शुद्ध गुंगुल भरें। फिर उसे आटे की मोटी लेई लगाकर खूब आग में सेकें।। जब पूरी तरह से सिकाई हो जाए तब आंटे की परत को हटा दें तथा खजूर एवं गुंगूल को बारीक कुट कर चने के बराबर की गोली बनाएं। इसे सुबह - शाम एक - एक गोली गाय के दूध या गुनगुना पानी के साथ लें।

2) पांच ग्राम पोस्त दाना एवं पांच ग्राम मिश्री को अच्छी तरह से कूट लें। इसे दूध या गर्म पानी के साथ एक - एक चम्मच सुबह - शाम लें।

25) गोमयादी दंतमंजन

इससे दांतों का दर्द, दांत से खून आना, दांतों से मवाद आना, मुंह सें दुर्गंध आना, दांतों का मैल, असमय दांतों का हिलना आदि कई रोगों में हितकर।

सेवन विधि : प्रात: छोटे चम्मच से एक चौथाई पाउडर अंगुली से दांत पर घीसें।

विशेष निर्देश : चिकित्सक के अनुसार।

मुख्य घटक : गोशकृत, सादा कर्पूर, अजवायन सत्त, लवंग, नीलगिरि तेल, सादा नमक, पुदिना सत्त एवं सेंधा नमक।

उपलब्धता : 100 ग्राम

गोसेवा राशि : रुपया 25.00

जोड़ों का दर्द

1) जायफल का चूर्ण 2 ग्राम, 2) अश्वगंध का चूर्ण 3 ग्राम, इन दोनों को बारीक चूर्ण बना लें। इसे प्रतिदिन प्रात:काल गाय के गुनगुना दूध के साथ लें। 2) असली हिंग को गाय के शुद्ध घी में मिलाकर दर्द वाले अंगों पर मालिश करें।

3) सूखा तुलसी पत्ता एवं मंजरी, अश्वगंध, सोंठ एवं पीपलामूल की 10-10 ग्राम मात्रा का चूर्ण बना लें। इसे प्रतिदिन सुबह - शाम एक - एक चम्मच गाय के दूध के साथ पीएं।

26) गोमयादी रूप निखार

यह चेहरे पर होने वाले कील-मुंहासे झुर्रियां पिम्पल्स तथा आंख के आस - पास पड़ने वाला काला धब्बा को साफ करता है और आकर्षक एवं चमकीला बनाता है।

लगाने की विधि : स्नान करने के 15 मिनट पूर्व चूर्ण को पानी में मिलाकर चेहरे पर लगाएं।

विशेष निर्देश : इस दौरान कोई अन्य प्रकार के क्रिम, पेस्ट आदि का प्रयोग न करें।

मुख्य घटक : हल्दी, बेसन, दही, मलाई, खीरा बीज, नीम मूल।

उपलब्धता : 50 ग्राम

गोसेवा राशि : रुपया 20.00

पेशाब में जलन

1) आधा चम्मच हल्दी एवं 5 ग्राम आंवले का रस दोनों एक -एक कप मट्ठा में मिलाकर सुबह - शाम पीएं।
2) ककड़ी - खीरा के बीज का चूर्ण बना लें। और प्रतिदिन एक - एक चम्मच छांछ में मिलाकर पीएं।
3) पुराना गुड़ छांछ में मिलाकर पीएं।
4) पषाणभेद चूर्ण को छाछ में मिलाकर पीएं।

रसायन मुक्त अनाज

अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के चक्कर में जिस प्रकार से रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है उसी गति से मानव शरीर में व्याधि बढ़ते जा रहे हैं। इन व्याधियों पर अंकुश लगाने के लिए एक मात्र रास्ता है - रसायन मुक्त अनाज का उत्पादन। इसी दृष्टिकोण से महर्षि वाग्भट्ट चिकित्सा एवं पंचगव्य अनुसंधान केन्द्र पिछले 6 वर्षों से रासायण मुक्त अनाज उगाने के कार्य में लगा हुआ है। इस श्रेणी में मुख्य रूप से चावल, दाल और तिलहन की पैदावार की जाती है।

चावल

केन्द्र में मुख्य रूप से चावल की निम्न प्रजातियां उगाई जाती है।

चावल : **1) वेल्लम पोनी -** यह 5 माह का जड़हन धान है। इसमें विटामिन-ए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है।

2) गुण्डु पोनी - यह इडली और डोसा के लिए श्रेष्ठ है।

3) जीरासांभ - यह भी 5 माह का जड़हन धान है। इसमें विटामिन-ए के अलावे कई प्रकार के मिनरल की अधिकता है।

4) सुपर पोनी - यह सामान्य रूप से प्रयोग के लिए अच्छा है।

दलहन

1) मूंग - मूंग रूचिकारक, हल्का, सुपाच्य, कफ व पीत्त नाशक तथा वायुहारक है। इसका प्रयोग प्रतिदिन किया जा सकता है। मूंग का प्रयोग छिलका के साथ करना अधिक लाभकारी है। इससे बराबर मात्रा में फाइबर मिलता रहता है।

2) उड़द - उड़द पौष्टिक व शीतलकारी है। प्रोटीन की अधिकता होने के कारण लकवा जैसे रोगों में भी गुणकारी और दलहन में सर्वोत्तम है। यह इडली व ढोसा के लिए मुख्य अनाज है। छिलका सहित दाल के रूप में सेवन करना ज्यादा लाभकारी है।

3) तुअर - सामान्य रूप से स्वस्थ व्यक्ति के लिए तुअर की दाल उत्तम है। यह पीत, कफ एवं रक्त दोष दूर करने वाला दलहन है।

गौ

तत्व

गौमूत्र
पंचगव्य दवा का मुख्य घटक।

गोबर
पंचगव्य दवाओं का एक हिस्सा।

दूध
दही छांछ घी
पंचगव्य दवाओं का हिस्सा, अमृत स्वास्थ्य रक्षक पेय।

रसायन मुक्त मूंगफली और तिल का तेल

1) - केन्द्र में उगाया गया तेल पूर्ण रूप से प्राकृतिक है। इसे देशी गायों के गोबर एवं गौमूत्र से पैदाकर निकाला गया है।

2) - इस कारण तेल में प्राकृतिक मूंगफली और तिल का सुगंध होती है।

3) - प्राकृतिक तेल होने के कारण तिलहन के रंग से मिलता - जुलता तेल होता है।

4) - इस तेल को निकालने में मोटर कोल्हू का प्रयोग किया जाता है। जिसके कारण तेल को जब प्रथम बार कड़ाही में डालकर गर्म किया जाता है तब झाग निकलता है जो कि प्राकृतिक तेल का गुण है।

5) - कोल्हू से निकाला गया कच्चा तेल होने के कारण डिब्बे की तराई में अल्प मात्रा में तिलहन की खल्ली जम जाती है। जिसे भी प्रयोग में लिया जा सकता है।

6) - यह तेल पूरी तरह से रसायन मुक्त है। इस कारण इसे वर्ष भर तक खाने के काम में लाया जा सकता है।

7) - इस तेल में वर्ष भर चिपचिपापन नहीं आता।

8) - इस तेल को प्रयोग करने के पूर्व लोहे की कड़ाही में उबाल कर पैक कर रख लें तो प्रयोग के समय झाग नहीं निकलेगा।

पंचगव्य दवाओं की सेवन विधि

1) **अर्क :-** सुबह-शाम नाश्ता के आधा घंटा बाद 2-3 चम्मच बिना पानी मिलाए लें।
2) **वटी :-** सुबह-शाम नाश्ता के आधा घंटा बाद 2-2 वटी अर्क के साथ लें।
3) अर्क या वटी खाने के पूर्व और बाद में आधे घंटे तक कुछ भी न खाएं और न ही पीएं।
4) **शाकाहार :** पंचगव्य औषधि सेवनकाल में पूर्ण रूप से शाकाहारी जीवन जीएं।
5) **तेल :** ऐसे पदार्थ का सेवन ज्यादा न करें जिसमें तेल और मसाला की अधिकता हो।
6) **मिर्च :** लाल मिर्च का सेवन न कर हरी मिर्च तथा काली मिर्च का सेवन करें।
7) **तम्बाकू :** कम से कम पंचगव्य दवा लेने के दौरान किसी भी प्रकार के धूम्रपान एवं शराब से बचें।
8) **पानी :** सुबह खाली पेट तथा शाम में सोते समय गुनगुना पानी घुंट-घुंट कर अवश्य पीएं।
9) **भोजन :** रात्रि का भोजन बंद कर शाम में 6.30 से 7.30 बजे के बीच हल्का एवं सुपाच्य लें।